10

भारत-गौरव

मैथिलीशरण गुप्त
(जन्म : सन् 1886 ई. : निधन : सन् 1964 ई.)

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म झाँसी जिले के चिरगाँव में हुआ था। बाल्यावस्था से ही कविता में इनकी रुचि थी। इनकी प्रारंभिक रचनाएँ हिन्दी की पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित हुईं। महावीरप्रसाद द्विवेदी के प्रोत्साहन ने इनके कवि-व्यक्तित्व का परिष्कार कर दिया। राम-भक्ति में सराबोर पारिवारिक संस्कारों ने इन्हें राम-काव्य लिखने के लिए प्रोत्साहित किया और तत्कालीन राष्ट्रीय परिस्थितियों से प्रभावित होकर इनकी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना और स्वदेश गौरव की गूंज सुनाई देने लगी। इसी कारण ये राष्ट्रकवि के संबोधन से प्रसिद्ध हुए। 'भारत-भारती', 'साकेत', 'पंचवटी', 'यशोधरा', 'विष्णुप्रिया' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। हिन्दी साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में अनुपम योगदान के कारण इन्हें 1954 में 'पद्म-भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया तथा राज्यसभा का सदस्य भी मनोनीत किया गया।

प्रस्तुत काव्य 'भारत-भारती' से लिया गया है जिसमें तीन खंड में देश का अतीत, वर्तमान और भविष्य चित्रित है। गुप्तजी ने भारत के अतीत का गौरवशाली चित्र प्रस्तुत किया है और इन्हीं विशेषताओं के आधार पर उसे विश्व के सिरमौर पद पर प्रतिष्ठापित किया है। इस काव्य में कवि ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति का गौरव गान किया है। इसके साथ-साथ आर्यों के महान जीवन आदर्शों का भी चित्रण किया है।

भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है॥

हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है?
विधि ने किया नर सृष्टि का पहले यही विस्तार है।

यह पुण्यभूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी आर्य हैं,
विद्या, कला-कौशल सबके जो प्रथम आचार्य हैं।
सन्तान उनकी आज यद्यपि, हम अधोगति में पड़े,
पर चिह्न उनकी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े।

वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे;
वे स्वार्थ-रत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
संसार के उपकार-हित जब जन्म लेते थे सभी,
निश्चेष्ट होकर किस तरह वे बैठ सकते थे कभी?

शब्दार्थ और टिप्पणी

गौरव सम्मान, प्रतिष्ठा **भू-लोक** संसार, दुनिया **लीला स्थल** महान पुरुषों की क्रीड़ा भूमि **उत्कर्ष** उन्नति, प्रगति **सिरमौर** श्रेष्ठ **पुरातन** प्राचीन **भव-भूति** संसार का वैभव **विधि** ब्रह्मा, सृष्टि की रचना करनेवाला देवता **आचार्य** शिक्षक, आदर्श आचार को आचरण में लानेवाला **अधोगति** अवनति, दयनीय दशा **स्वार्थरत** केवल अपना ही लाभ देखनेवाला **मदिरा** शराब, मद्य **संसार** दुनिया **निश्चेष्ट** निष्क्रिय, चेष्टारहित

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) भारत को प्रकृति का लीला-स्थल क्यों कहा है?

(2) भारतवर्ष को वृद्ध क्यों कहा गया है?

(3) विधाता ने नर-सृष्टि का विस्तार कहाँ से किया है?

(4) आर्य किन-किन विषयों के आचार्य थे?

(5) आर्यों की संतान आज किस स्थिति में जी रही है?

(6) आर्यों की क्या विशेषताएँ रही हैं?

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) गुप्तजी ने भारत के गौरव को किस रूप में हमारे सामने रखा है?

(2) भारतवासियों के बारे में गुप्तजी क्या कहते हैं?

3. **योग्य विकल्प द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :**

(1) भारत को .... कहा गया है ।

(क) ऋषिभूमि (ख) तपोभूमि (ग) वीरभूमि

(2) वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का .... है।

(क) तिलक (ख) आभूषण (ग) सिरमौर

(3) विधि ने .... का विस्तार यहीं से किया है।

(क) नरसृष्टि (ख) जीवसृष्टि (ग) पशुसृष्टि

(4) भारत के निवासी .... हैं।

(क) मंगोल (ख) आर्य (ग) शक

(5) आर्यों की संतानों की आज .... हो गई है।

(क) अधोगति (ख) उन्नति (ग) अवगति

4. **'क' विभाग को 'ख' विभाग के साथ उचित रूप में जोड़ते हुए पूरा वाक्य लिखिए :**

'क'	'ख'
(1) वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का	(1) उत्कर्ष है।
(2) विद्या कला कौशल के	(2) प्रथम भंडार है।
(3) सम्पूर्ण देशों से अधिक भारत का	(3) सिरमौर है।
(4) भगवान की भव-भूति का	(4) दुनिया में कोई दूसरा नहीं है।
(5) भारत जैसा पुरातन देश	(5) आर्य हैं।
(6) भारत के निवासी	(6) प्रथम आचार्य आर्य हैं।

5. भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है।

(2) भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है।

6. शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

अधोगति, वृद्ध, पुरातन, प्रथम, विस्तार, पुण्यभूमि, उत्कर्ष, उच्च

7. शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

हिमालय, गंगा, गिरि, भूमि, विश्व, मदिरा

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- भारत-गौरव से संबंधित कविताओं का संकलन कीजिए।
- 'भारत देश' पर एक निबंध लिखिए।

●